DEV SANSKRITI: Interdisciplinary International Journal (2017), 9, 18-24 (ISSN: 2279-0578)

21वीं शताब्दी में आध्यात्मिक पर्यटन: मूल्यवान घटक और नवीन दृष्टिकोण

आशीष कुमार, अजय भारद्वाज

सारांश

पर्यटन के क्षेत्र में आध्यात्मिक पर्यटन विषय पर निरंतर शोध कार्य हो रहा है। इक्कीसवीं सदी में पर्यटन उद्योग तेजी से फैल रहा है जिसमें आध्यात्मिक पर्यटन ने एक नया आयाम जोड़ा है, जिसे "स्पिरिटुअल टूरिज्म" कहा जाता है। आध्यात्मिक पर्यटन के परिणाम स्वरूप इस विषय में जागरूकता और शोध में वृद्धि हुई है। आध्यात्मिक पर्यटन में शारीरिक स्वास्थ्य-सम्वर्धन और मानसिक मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान सम्पादन जैसे अनेकों लाभ जुड़े हुए है। आध्यात्मिक पर्यटन के स्थायित्व हेतु मूल्यवान पारम्परिक घटक जैसे आध्यात्मिक वातावरण आध्यात्मिक जीवन पद्धति, आध्यात्मिक क्रियाकलाप को शोध का मूल माना गया है। यह कार्य पर्यटन अनुसंधान में भविष्य के शोध कार्य की संभावनाओं प्रदर्शित करता है एवं आध्यात्मिक पर्यटन के स्थायित्व एवं नवीन दृष्टिकोण पर जोर देता है।

कूट शब्दः आध्यात्मिक पर्यटन, आध्यात्मिक वातावरण, आध्यात्मिक जीवन पद्धति, आध्यात्मिक क्रियाकलाप

प्रस्तावना

साधारण अर्थ में अध्यात्म, धार्मिक कार्य है परंतु अध्यात्म केवल धार्मिक कार्य नहीं है, वरन् धार्मिक कार्य अध्यात्म का एक साधन है। अध्यात्म के वृहत दायरे में सें एक बहुप्रचलित माध्यम है पर्यटन और पर्यटन का महत्वपूर्ण एवं तेजी से उभरता भाग है आध्यात्मिक पर्यटन। आध्यात्मिक पर्यटन के माध्यम से व्यक्ति स्वास्थय को प्राप्त करता है, साथ ही सद्विचार एवं सद्गुणों का संचार भी होता है। पर्यटक मानवी सभ्यता के विभिन्न आयामों को सीखता है और जब वह इन सीखों को स्वयं में धारण कर लेता है तब वह अध्यात्म की राह पर चल पड़ता है।

पर्यटन का नवीन आयाम है आध्यात्मिक पर्यटन। पर्यटन का तात्पर्य एक स्थान से दूसरे स्थान अथवा देश-विदेश में परिभ्रमण है। पर्यटन निरूद्देश्य नहीं होता। पर्यटन की प्रेरणा राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक, व्यापारिक आदि अनेक कारणों से प्राप्त हो सकती है। इनके अतिरिक्त मनोरंजन, अनुसंधान, अध्ययन, स्वास्थ-लाभ अथवा अन्य व्यक्तिगत कारण भी पर्यटन के मूल में हो सकते हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए संसार के सभी सभ्य देशों के बीच नागरिकों की यात्रा अब नित्य की दिनचर्या है। वर्ल्ड ट्रेड आर्गेनाईजेशन (डब्ल्यू0 टी0 ओ0) के अनुसार ''एक व्यक्ति जो अपने स्थान के अतिरिक्त दूसरे स्थान में अवकाश या व्यवसाय के उद्देश्य से 24 घण्टे से अधिक व्यतीत करें, उसे पर्यटन कहते है।'' कैंब्रिज शब्दकोश के अनुसार ''पर्यटन एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें विभिन्न सेवाएँ जैसे परिवहन, रहने के लिए जगह, और छुट्टी पर रहने वाले लोगो के लिए मनोरंजन आदि सुविधाओं को प्रदान करना है।'' नवीन परिदृश्य में पर्यटक आध्यात्मिक पर्यटन के लिए देश-विदेश की यात्राएँ कर रहा है।

साहित्य मत

पर्यटन 'अर्थशास्त्र' से सम्बंधित शब्द है। इसका अंग्रेजी शब्द Tourism है जिसका सम्बंध Tour से है जो लैटिन भाषा के Tornos से लिया गया है जिसका अर्थ एक औजार से है, जो एक पहिए की भाँति गोलाकार होता है। इसी Tornos शब्द से चक्रीय यात्रा या पैकेज यात्रा का विचार सृजित हुआ है। "Tour" के दौरान पर्यटक की पर्यटन स्थल के प्रति व्यापार, रोजगार की सम्भावनाओं, स्वास्थ्य एवं शिक्षा लाभ, पर्यावरण व मनोरंजन से सम्बन्धित पूर्ण जानकारी प्राप्त करने की लालसा रहती है। 'जब मानव अपने न्यवसित स्थान से बाहर निकलकर दूसरे स्थान पर जाता है और वहाँ कुछ काल तक उसका ठहराव होता है तो उसकी इस क्रिया को पर्यटन कहते है।'

सहाय, शिवस्वरूप (1995), ने पर्यटन की व्याख्या इस प्रकार की है ''पर्यटन' शब्द के अधीन वे सारी क्रियाएं सम्मिलित है जो कि यात्रियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। पर्यटक स्थल प्राकृतिक संसाधनों, बुनियादी सुविधाओं, सांस्कृतिक विशेषताओं, विशिष्ट स्थानीय सुविधाओं से मिलकर उद्योग के एक जटिल उत्पाद के रूप में माना जा सकता है (सहाय, शिवस्वरूप 1995)।''

इन्दौलिया उमाकांत (2011) के अनुसार ''भारत प्राचीन सभ्यताओं वाला देश है। यहां की सभ्यता एवं संस्कृति प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। यहां पर सभी धर्मों, वर्गों, जातियों और विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग एक साथ मिलकर रहते हैं जो एकता एवं शांति का प्रतीक है। हमारे देश में सारे संसार की झलक देखी जा सकती है, इसलिए शुरू से ही भारत विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। हमारे देश में अतिथि देवो भव की परंपरा पुरानी है (इन्दौलिया उमाकांत 2012)।''

कपूर एवं विमल कुमार, (2008) ने ''पर्यटन किसी स्थान विशेष की यात्रा है और उस स्थान विशेष की यात्रा करने वाला पर्यटक है। पर्यटक का उद्देश्य यात्रा

करने के साथ किसी स्थान विशेष पर चैबीस घंटे से अधिक खाली समय बिताने के लिए बिना धन लाभ अर्जन की इच्छा के ठहरना है(कपूर, विमल कुमार 2008)।''

पाण्डेय मोनिका (2012) के अनुसार ''आध्यात्मिक पर्यटन के तीन प्रयोजन है: पहला तीर्थ क्षेत्र में रहकर आत्मोत्कर्ष की साधना करना। दूसरा तीर्थो में अवस्थित देवालयों, स्मारकों जलाशयों, इतिहासों से प्रेरणा ग्रहण करना। तीसरा नवजीवन का संचार करना (पाण्डेय मोनिका 2012)।''

पाराशर अरूणेश (2012) ने स्वास्थ्य पर्यटन की अवधारणा को स्पष्ट किया है ''स्वास्थ्य पर्यटन की अवधारणा तो प्राचीन काल से ही चली आ रही है। प्राचीन समय में यात्री मनुष्य अपने स्वास्थ्य के लिए धार्मिक भावना सहित अपनी यात्रा को संपन्न करता था (पाराशर अरूणेश 2012)।''

माधेकर एवं हक, (2012) ने ''बौद्ध, ईसाई, हिंदू, जैन, सूफी, सिख और सर्व धर्म सर्किट सात प्रमुख आध्यात्मिक पर्यटन सर्किट के विषय में विस्तार से वर्णन किया है (माधेकर एवं हक, 2012)।''

पारिक शिक्षा (2012) के अनुसार ''प्रवासियों के ठहरने और भ्रमण करने से उत्पन्न होने वाले सम्बंधों और परिघटना का योग है, शर्त यह है कि यह ठहराव स्थायी न हो और वे किसी प्रकार की कमाई करने न आए हो"। इस परिभाषा में भ्रमण और ठहराव पर जोर दिया गया है पर इसमें दिनभर के भ्रमण, व्यापार-यात्राओं और जुड़ी गतिविधियों को छोड़ दिया गया है (पारिक शिक्षा 2012)।''

बिसेन के. मिनेन्द्र (2014) 'जब कोई व्यक्ति अपने निवासीय स्थान से किसी दूसरे स्थान की यात्रा करता है, यह यात्रा 24 घण्टे से ज्यादा और 365 दिन से कम दिन की हो तथ इस यात्रा का उद्देश्य आनन्द, आन्तरिक शान्ति, आराम आदि हो तो उसे पर्यटन कहते है (बिसेन के. मिनेन्द्र 2014)"।

एस प्रसाद, एसडी सिंह, एवं वी कुमारी, (2013) के अनुसार ''भारत में पर्यटन के उभरते आयामों का एक अनुभवजन्य अध्ययन किया है जिसमें सबसे अधिक लोकप्रिय आध्यात्मिक पर्यटन का उन्होनें वर्णन किया हैं जो पवित्र गंगा नदी पर केंद्रित हैं। बद्रीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार, गंगोत्री, यमुनोत्री, इलाहाबाद, वाराणसी। जगन्नाथ मंदिर में उड़ीसा में पुरी, भुवनेश्वर, कोणार्क, जम्मू-कश्मीर के माता वैष्णोदेवी आदि उत्तर भारत में कुछ महत्वपूर्ण तीर्थ केंद्र हैं(एस प्रसाद, एसडी सिंह, एवं वी कुमारी, 2013)।''

चंदेल एवं वत्स, (2013) के अनुसार ''ई-कामर्स पर्यटन को भविष्य की प्रबल सम्भावना बताते है जो पर्यटन के विकास के लिए दिशा निर्धारण का कार्य करेगी। जो अब आध्यात्मिक पर्यटन को अत्यधिक गति से विस्तारित करने में सक्षम होगा(टूरिज्म इ-कॉमर्स, 2013)।''

आध्यात्मिकता और पर्यटन

अध्यात्म श्रद्धा और अनुभूति का विषय है(पण्ड्या प्रणव 2015)। पं. श्रीराम शर्मा (1998) चेतना का विज्ञान अध्यात्म है। अध्यात्म का अर्थ है अपने भीतर के चेतन तत्व को जानना, मानना और दर्शन करना अर्थात् अपने आप के बारे में जानना या आत्मप्रज्ञ होना गीता के आठवें अध्याय में अपने स्वरुप अर्थात जीवात्मा को अध्यात्म कहा गया है (शर्मा श्रीराम 1998)।

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोध्यात्ममुच्यते।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः।।
(श्रीमद्भगवतगीता - 8/3)

अध्यात्म विचारों का ऐसा समुच्य है जो व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। अध्यात्म वह मार्ग है जो मानव को मानव से देवमानव बनाता है। व्यक्ति को आध्यात्मिक वातावरण में ले जाया जाए तो वह अध्यात्म सीखना चाहे या ना चाहे लेकिन वह आध्यात्मिक अनुभूति करने लगता है इसी कारण पर्यटक अध्यात्म की ओर आर्कषित होता है (स्वामी रामसुखदास 2018)। पर्यटक जब आध्यात्मिक यात्रा पर होते हैं तो वह अध्यात्म संबंधी शंकाओं का समाधान धर्म ग्रंथों के सहारे अथवा धर्म गुरु के सानिध्य में बैठकर कर सकते हैं। इसके द्वारा आध्यात्मिकता का विकास होता है। आचरण में शुद्धता आती है और जीवन पद्धति में बदलाव आता है। प्रायः धार्मिक स्थानों की यात्रा करने पर पर्यटक नियम-धर्म का पालन करने लगते हैं, भोजन में मांस मदिरा का परित्याग कर देते हैं, रहन सहन के तरीके में परिवर्तन आता है, धार्मिक त्योहारों को मनाते है, इस प्रकार पर्यटक आध्यात्मिक स्थलों से आनन्द, सुख और शान्ति की प्राप्ति करता है। आध्यात्मिक पर्यटन के दौरान आध्यात्मिक विचारों का संचार होता है। वर्तमान समय में व्यक्ति शांति के लिए आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हो रहा है। वह आध्यात्मिक पर्यटन करता है। प्राचीन काल में आध्यात्मिक यात्रा परमात्मा की प्राप्ति अथवा मोक्ष की प्राप्ति के लिए करते लेकिन वर्तमान काल का मनुष्य अध्यात्म की प्राप्ति के लिए पर्यटन करता है। आध्यात्मिक पर्यटन के अंतर्गत धार्मिक यात्राएँ, तीर्थ यात्राएँ, आध्यात्मिक यात्राएँ एवं सांस्कृतिक यात्राएँ की जाती है।

आध्यात्मिक पर्यटन का स्वरूप

आध्यात्मिक पर्यटन किसी विशेष धर्म से संबंधित ना होकर समस्त धर्मों का समन्वय हैं यह एक ऐसा पर्यटन है जहां व्यक्ति आत्मशोधन व आत्म परिष्कार के लिए यात्रा करता है यह स्थान के वातावरण तथा वहां चल रहे क्रियाओं द्वारा परिवर्तित व्यक्तित्व से संबंधित है आध्यात्मिक पर्यटन संस्थान के महत्व तथा वहां चल रहे क्रियाओं के महत्व को दर्शाता है और यह स्थान मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च आदि से तथा उनसे संबंधित क्रियाएं तथा नदी किनारे पर बैठकर साधना करना तथा पर्वत व गोवर्धन गिरनार सतपुड़ा विंध्याचल की परिक्रमा भी हो सकती है पर्यटन का उद्देश्य आनंद मनोरंजन एवं ज्ञान के लिए की गई यात्रा है। रावत, ताज (2002) "इस आधुनिकतम समय में भी भारत में आध्यात्मिक पर्यटन का क्षेत्र तेजी से विस्तृत हो रहा है। ऐसे में तीर्थस्थल हों, पवित्र नदियां हों अथवा महापुरूषों की जन्मस्थलियां व तपस्थलियां हों - पर्यटन की दृष्टि से सभी का ध्यान आकर्षित करते है (रावत, ताज 2002)।"

तैत्तिरीयोपनिषद के शिक्षावल्ली के ग्यारहवे अनुवाक के अनुसार "अतिथि देवो भवः" की उक्ति में आध्यात्मिक पर्यटन का विशाल स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। भारतीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 2003 में "अतिथि देवो भवः" को अतुल्य भारत के अंतर्गत इस्तेमाल करना प्रारम्भ किया गया ताकि विभिन्न देशों से लोग भारत में पर्यटन करने आए। आध्यात्मिक पर्यटन स्थल से तात्पर्य ऐसा स्थल, जहाँ व्यक्ति अपनी आंतरिक चेतना के विकास की प्राप्ति करता है न की किसी धर्म या धार्मिक व्यक्ति से संबंधित स्थल। आध्यात्मिक पर्यटन सार्वभौमिक तत्व है और इसका अनुसरण करने वालों का किसी विशेष धर्म से संबंधित होना जरूरी नहीं। इस दृष्टि से भारत भूमि पर अनेक ऐसे पर्यटन स्थल हैं जहाँ कुछ समय गुजारने पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिष्कार होने लगता है, उसमें लोक-कल्याण के भाव तरंगित होने लगते हैं। इस विषय का सबसे बड़ा पर्यटन स्थल हिमालय क्षेत्र माना जा सकता है जहाँ रहकर अनेक संत, महात्माओं, ऋषियों, विदेशी पर्यटकों, साहित्यकारों, पर्वतारोहियों और पर्यटकों आदि ने आध्यात्मिक पर्यटन का लाभ प्राप्त किया है। उन्होंने हिमालय के उस आध्यात्मिक वातावरण से साहस,

शौर्य, पराक्रम, विपरित परिस्थितियों में रहने के गुणों को विकसित किया ।

आध्यात्मिक पर्यटन के मूल्यवान पारम्परिक घटक

किसी भी प्रकार का पर्यटन, अपने घटक पर आधारित रहता है। पर्यटक अपने पर्यटन के उद्देश्य और उससे होने वाले लाभ के आधार पर पर्यटन का चुनाव करता है। आध्यात्मिक पर्यटन, पर्यटक के मन पर प्रभाव डालता है उसका उद्देश्य ही अन्तःकरण को शुद्ध कर व्यक्तित्व का विकास करना है और यह सब आध्यात्मिक पर्यटक के निर्धारित घटकों द्वारा ही सम्भव है। पर्यटकों को आध्यात्मिक पर्यटन के अंतर्गत होने वाले लाभ 'घटक' के आधार पर ही सम्भव है।

अ) वातावरण

वातावरण नदी के बहाव और आँधी तूफान के आवेग जैसा ही होता है। मनुष्य दर्पण की तरह है। जिस रंग की प्रखरता उनके समीप होती है, वैसी ही उसकी दर्पण में छवि बन जाती है। मनुष्य के आसपास का वातावरण दो तरह का हो सकता है, एक सामान्य वातावरण और दूसरा आध्यात्मिक वातावरण।

सामान्य वातावरण - सामान्य वातावरण मनुष्य पर ज्यादा प्रभाव नहीं डालता क्योंकि मनुष्य उस सामान्य वातावरण का आदि हो चुका होता है। सामान्य वातावरण मनुष्य को कुछ वक्त का आनन्द दे सकता है लेकिन यह आनन्द सीमित समय के लिए ही होता है। यह वातावरण हमें आनन्द दे सकता है परन्तु हमारी अन्तरात्मा को शान्ति नहीं दे पाता।

आध्यात्मिक वातावरण - आत्मशोधन और आत्म परिष्कार के विधि-विधान तपःपूत ऋषियों के संरक्षण में पूरे करने से तीर्थ सेवन एवं पर्यटन के सभी उद्देश्य पूरे हो जाते थे। इसके पीछे आध्यात्मिक वातावरण की विशिष्ट भूमिका है कुछ प्रतिभाशाली लोग ही आध्यात्मिक वातावरण को बनाने में समर्थ होते है। सर्वसाधारण तो वातावरण के प्रभाव के अनुरूप ढलते रहते है। जिस ढर्रे पर घर के, समाज के, आसपास के लोग रहते हैं। साधारण व्यक्ति भी घिसटकर उसी प्रवाह में बहने लगता है।

ब) आध्यात्मिक जीवन पद्धति

जीवन को व्यवस्थित तरीके से जीने की कला जीवन शैली या जीवन पद्धति कहलाती है। जीवन पद्धति को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है - दिनचर्याः जागरण से लेकर शयन, स्वाध्याय, निःस्वार्थ सेवा, प्राकृतिक और सात्विक भोजन। दिनचर्या अर्थात पूरे दिन को अलग-अलगकार्योंमें विभाजित कर देना तथा विभाजित कार्यो को निर्धारित वक्त पर पूरा करना दिनचर्या कहलाती है। सात्विक आहार - आयुर्वेद में भोजन को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है - सात्विक, राजसिक और तामसिक। सात्विक भोजन वह भोजन है जिसके सेवन के पश्चात् मनुष्य का दिमाग शान्त और शरीर स्वस्थ रहता है। राजसिक भोजन वह भोजन है जिसके सेवन से व्यक्ति को स्फूर्ति और उत्तेजना प्रदान करता है। तामसिक भोजन वह भोजन है जिसके सेवन से व्यक्ति आलस्य, प्रमाद एवं तम से ग्रसित हो जाता है।

स) आध्यात्मिक क्रियाकलाप

आध्यात्मिक पर्यटन का पूरा-पूरा लाभ आध्यात्मिक दिनचर्या का पालन करने से मिलता है। योग, ध्यान, प्राणायाम, सत्संग, स्वाध्याय और पंचकर्म आदि आध्यात्मिक क्रियाकलाप के अंर्तगत आते है। योग भी आध्यात्मिक पर्यटन का महत्वपूर्ण कार्य है। प्रणव पण्ड्या ने योग को उत्साह आशा, अनुशासन एवं जीवन के रूपांतरण के रूप में परिभाषित किया है। कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना ही योग है।

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।½ - पातंजल योग सूत्र में चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग कहा गया है (हरिकृष्णदास गोयन्दका 2016)। योग के लिए प्रसिद्ध आध्यात्मिक पर्यटन स्थल - ऋषिकेश, हरिद्वार,

लोनावला, मुंगेर, केरल आदि। संगीत - संगीत द्वारा भजन कीर्तन करने की परम्परा मंदिरो, मठो आध्यात्मिक स्थानों में प्राचीन काल से ही प्रचलित रही है। भावनाओं के विकास में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। अन्तःकरण की भाव तरंगो को लहरा देना और उसे किसी भी दिशा में प्रोत्साहित कर देना संगीत के द्वारा संभव है। पर्व, त्यौहारों, घरेलू उत्सवों विवाह आदि संस्कारों के अवसरों पर संगीत की महत्ता प्रासंगिक है। उत्तराखंड के लोक संगीत में आम विषयों प्रकृति की सुंदरता, विभिन्न मौसम, त्यौहार, धार्मिक परंपराओं, सांस्कृतिक प्रथाओं, लोक कथाओं, ऐतिहासिक पात्रों, पूर्वजों की बहादुरी और प्रेम गीतों की सुंदरता हैं। आध्यात्मिक शिक्षा - आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विश्व भर से पर्यटक उत्तराखण्ड आते है। उत्तराखण्ड के प्रमुख आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र - स्वामी दयानन्द सरस्वती आश्रम, परमार्थ निकेतन आश्रम, शान्तिकँज आश्रम, स्वामी रामा साधक ग्राम, योग ग्राम, पतंजलि योग केन्द्र आदि।

आध्यात्मिक पर्यटन में नवीन दृष्टिकोण

अ) पर्यटन में वर्चुअल टूर

विज्ञान और आधुनिकता ने मानव जीवन को सहज और सरल बना दिया है। पर्यटक के लिए कहाँ जाना है? कैसे जाना है? और कहाँ रहना है? ऐसे कठीन काम है जो विभिन्न सम्स्यिाओं को जन्म देते है। ऐसे में मौलिक रूप से सबसे सुरक्षित विकल्प ट्रैवेल एजेंट की सहायता ही रहती है, लेकिन अब इंटरनेट के आगमन के साथ ही पूरा परिदृश्य बदल गया है। इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए अब वेबसाइट इंटरने का उपयोग करना बहुत आसान हो गया है। विभिन्न देशों के आकर्षक स्थल, आवागमन और आवास आदि का विवरण आनलाइन उपलब्ध है। "आधुनिक यात्री अपनी छुट्टियों की आनलाइन योजना बनाते हैं।" वर्तमान में समय की कमी, काम की अधीकता और साधनों का अभाव आदि समस्याओं के कारण वर्चुअल टूर पर्यटकों के लिए एक विकल्प के रूप में उभर कर आ रहा है। वर्चुअल टूर एक एक मनोरम दृश्य या वीडियो द्वारा परिभ्रमण है जिसमें मौलिक स्थान को आनलाइन देखा जा सकता है, अधिकांश यह यात्रा, पर्यटन या अनुसंधान के लिए उपयोग में लाया जाता है।

ब) पर्यटन में लाइव दर्शन, प्रवचन एवं योग

भारतीय संस्कृति में किसी देवता या पवित्र व्यक्ति अथवा स्थान को देखना, दर्शन कहलाता है। दर्शन शब्द संस्कृत की दृश् धातु से बना है- "दृश्यते यथार्थ तत्वमनेन" अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ तत्व की अनुभूति हो वही दर्शन है। हिंदू परंपरा में, दर्शन पवित्र व्यक्ति, पवित्र वस्तु, प्राकृतिक घटना या देवता को विशेष रूप से देखने में संदर्भित करता है। लाइव दर्शन पर्यटकों के लिए श्रेष्ठ विकल्प हो रहा है। यद्यपि लाइव दर्शन को आध्यात्मिक पर्यटन के आधुनिक चलन और प्रक्रिया का एक शक्तिशाली रूप माना जाता है। तीर्थयात्री अथवा पर्यटक को अपने इष्ट, देवता अथवा अपने पारम्परिक आदर्श को देखने और दर्शन करने, दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा रहती है जिसे वह जाकर पूरी नही कर पाता है ऐसी अवस्था में लाइव दर्शन आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है। दर्शन घर अथवा ऑफिस में रहते हुए भी किये जा सकते है। साथ ही प्रवचन एवं योग का लाभ भी ऑनलाइन लिया जा रहा है।

उपसंहार

हिंदू धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, पारस्परिक रूप से भारत में रह रहे है। भारत में न केवल आध्यात्मिक पर्यटन के समृद्ध स्थल है बल्कि यहाँ विभिन्न सांस्कृतिक विरासत भी उपलब्ध है जैसे विभिन्न संस्कृति, सम्प्रदाय, रहन-सहन, खान-पान, पर्व-त्यौहार, उत्सव-संस्कार आदि। भगवान कृष्ण ने मथुरा वृंदावन का भ्रमण किया है तो भगवान राम का भ्रमण उत्तर में अयोध्या से लेकर दक्षिण में रामेश्वरम का तक फैल गया। बौध धर्म के प्रमुख केंद्र जो आज आध्यात्मिक पर्यटन स्थल है बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, लुम्बिनी आदि। आध्यात्मिक पर्यटन की सम्भावनाएं कश्मीर से

कन्याकुमारी तक तो द्वारका से गंगासागर तक चहुँओर बनी हुई है। सरकार आध्यात्मिक पर्यटन की आवश्यकता और महत्व से प्रेरित होकर धार्मिक स्थलों पर पर्यटन की सुविधाएं विस्तार सुंदरीकरण आदि करना प्रारंभ कर रही है आज अयोध्या कुशीनगर श्रावस्ती सारनाथ आदि अपने मौलिक रुप से बहुत आगे बढ़ गया है। भारत के महेश योगी स्वामी विवेकानंद स्वामी रामकृष्ण परमहंस बालयोगेश्वर आदि ने विदेशों में भारत की पहचान नए परिवेश में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है उसका ही परिणाम है कि आज आध्यात्मिक पर्यटन निरन्तर प्रगति कर रहा है। आध्यात्मिक पर्यटन के प्रभाव वैश्विक रूप से दृष्टिगोचर होते है। यह शोध कार्य आध्यात्मिक पर्यटन के सांस्कृतिक प्रभाव पर प्रकाश डालता है ही साथ ही आध्यात्मिक पर्यटन के विकास की नवीन संभावनाओं एवं महत्व को भी सामने लाता है।

Ashish Kumar* Sahu, Ajay Bharadwaj, Research Scholar, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, India. *Email – ashish.pawar@dsvv.ac.in

सन्दर्भ

इन्दौलिया उमाकांत (2012) ''ग्रामीण पर्यटन की संभावना एवं प्रभाव: सामोद (जयपुर) के विशेष संदर्भ में।'' पी.एच.डी. शोध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एस प्रसाद, एसडी सिंह, एवं वी कुमारी, (2013) एन एम्पिरिकल स्टडी ऑफ़ इमर्जिंग डाइमेंशन्स ऑफ़ टूरिज्म इन इंडिया। साउथ एसीएन जर्नल ऑफ़ टूरिज्म एंड हेरिटेज 6(1), 145-158

कपूर, विमल कुमार (2008) पर्यटन के सिद्धान्त । नई दिल्ली- रजत प्रकाशन पृष्ठ-86

टूरिज्म इ-कॉमर्स: द फ्यूचर डायरेक्शन फॉर द डेवलपमेंट ऑफ़ टूरिज्म, देव संस्कृति इंटरडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल, जुलाई 2013, अंक-02, पृष्ठ 83-88

पण्ड्या प्रणव (2015) ''अन्तर्जगत की यात्रा का ज्ञान-विज्ञान'' श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, हरिद्वार, पृष्ठ-17

पाण्डेय मोनिका (2012) ''आध्यात्मिक पर्यटन का विकास एवं संभावनाएं शांतिकुंज के संदर्भ में।'' पी.एच.डी. शोध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाराशर अरूणेश (2012) ''उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य पर्यटन के स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन (ऋषिकेश के संदर्भ में)।'' पी.एच.डी. शोध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पारिक शिक्षा (2012) ''बुद्ध पर्यटन के सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययनः कुशीनगर के विशेष संदर्भ में।'' पी.एच.डी. शोध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

बिसेन के. मिनेन्द्र (2014) ''गढ़वाल क्षेत्र के विशेष संदर्भ में आध्यात्मिक पर्यटन क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों पर वैश्विकरण के सांस्कृतिकप्रभाव का अध्ययन।'' पी.एच.डी. शोध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

माधेकर एवं हक, (2012) "डेवलपमेंट ऑफ़ स्पिरिचुअल टूरिज्म सर्किट्स : द केस ऑफ़ इंडिया" GSTF बिज़नेस रिवीव (GBR), 2(2), 212

रावत, ताज (2002) "पर्यटन विकास के विविध आयाम।" नई दिल्ली- तक्षशिला प्रकाशन पृष्ठ-154

शर्मा श्रीराम (1998) "तीर्थ सेवन क्यों और कैसे?" प्रकाशन- अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा पृष्ठ-11.9

सहाय, शिवस्वरूप (1995) पर्यटको का देश भारत । दिल्ली- मोतीलाल बनारसीदास पृष्ठ-231

स्वामी रामसुखदास (2018) ''श्रीमद्भगवतगीता'' गीताप्रेस, गोरखपुर, अध्याय 8, श्लोक 3, पृष्ठ-581

हरिकृष्णदास गोयन्दका (2016) ''पातंजलयोग-दर्शन'' गीताप्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ-11